JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय समाज में शांति एवं मूल्यों के उन्नयन में शिक्षक की भूमिका

डॉ. प्रतिभा राज
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र विभाग)
शासकीय महाविद्यालय खिमलासा, जिला–सागर (म.प्र.)

शोध सारांश

वर्तमान समाज भौतिकता की अंधी दौड़ में फंसा हुआ है। मानव के जीवन में अर्थ (धन) का महत्व सबसे अधिक हो गया है एवं इसकी प्राप्ति के लिए वह दिन–रात प्रयासरत भी है। इसी कारण वह अनेक प्रमुख कर्तव्यो जैसे–बच्चों का समाजीकरण, नैतिकता एवं मूल्यों की शिक्षा आदि के साथ चाहते हुए भी न्याय नही कर पा रहा है। जैसा अरस्तु का मानना है कि **'परिवार मनुष्य की प्रथम पाठशाला है।'** सर्वमान्य सत्य है लेकिन वर्तमान समय में इस कथन की प्रासंगिता पर संदेह दिखाई देने लगा है क्योंकि परिवार रूपी पाठशाला में माता–पिता रूपी शिक्षकों के पास बच्चे रूपी शिष्यों की शिक्षा के लिए समय ही नही है। इसी का परिणाम है कि वर्तमान समाज में शैक्षणिक संस्थाओं की समाजीकरण, शांति एवं मूल्यों के उन्नयन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका होती जा रही है। लेकिन उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण आज शिक्षा एक व्यवसाय बनकर उभरा है । व्यक्तिगत लाभों के कारण सामाजिक हितों को ठेस लग रही है। इस पूरी व्यवस्था में अब केन्द्रीय भूमिका में शिक्षक है। अतः शिक्षक पर ही भारत के युवा वर्ग को मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा चरित्रवान, ईमानदार शांतिप्रिय, न्यायप्रिय, एवं कर्मठ बनाने का दारोमदार है । शिक्षक ही भारत के प्राचीन **वासुदेव कुटुम्बकम्** जैसे मूल्यों की पुनर्स्थापना कर सकते है। प्रस्तुत शोधपत्र इसी तर्क पर केन्द्रित है, जिसमें द्वितीयक तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए जायेगें।

कुंजी शब्द – शांति, शिक्षक, मूल्य–शिक्षा, नैतिकता, समाजीकरण

प्रस्तावना :– प्राचीन काल से भारत में विभिन्न धर्मो के लोग सद्भाव एवं शांति से रहते आ रहे हैं। हमारी संस्कृति में कुछ आधारभूत मूल्य एवं परम्पराएं ऐसी थी जो विभिन्न समुदायों के बीच एकता एवं सद्भाव को बढ़ावा देती थी। परंतु समकालीन भारत में साम्प्रदायिकता को राजनीतिक महत्वाकांक्षा के कारण बढ़ावा दिया जा रहा है जो राष्ट्रीय एकीकरण के लिए हानिकारक है। यही साम्प्रदायिकता विभिन्न समुदायों के छात्रों के मन में भी नफरत की भावना को बढ़ावा दे रही है। आर्थिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ती में व्यस्तता के कारण लोग अपने बच्चों को मूल्यों की शिक्षा देने एवं उन्हे उचित समय एवं ध्यान देने में सक्षम नही है। आत्मबोध, संतुष्टि, पूर्णता, विकास, एकता एवं अखण्डता इत्यादि, मूल्यों के प्रमुख उद्देश्य है। समाज में मूल्यों का महत्व एवं लिहाज जितना अधिक होगा वह समाज एवं समूह के लिए उतना ही हितकरी होगा। साम्प्रदायिकता एक विचारधारा है जिसमें परिकल्पना की जाती है कि एक धार्मिक समुदाय, राजनीतिक समूह के रूप में अपने सामाजिक, आर्थिक हितों एवं सांस्कृतिक हितों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए प्रतिबद्ध होता है।

समकालीन भारत में साम्प्रदायिकता में न केवल उग्रवादी धार्मिक समुदायों के बीच की हिंसा आती है बल्कि उन लोगों के बीच की हिंसा को भी शामिल किया जाता है जो धार्मिक दृष्टि से तो समान है लेकिन वो पृथक क्षेत्र एवं राज्य का प्रतिनिधित्व करते है। अर्थात धार्मिक कट्टरता एवं प्रबल क्षेत्रवाद की भावना भी सम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रही है। वर्तमान समय में शिक्षक का यह उत्तरदायित्व है कि वह छात्रों को मूल्यों की शिक्षा एवं मूल्यों के उपदेश के माध्यम से शांति को बढ़ावा देने वाले मूल्यों का विकास करे, क्योंकि केवल मूल्यों की शिक्षा एवं उपदेश ही छात्रों में साम्प्रदायिक सौहाद्र एवं राष्ट्रीय एकीरण की भावना को बढ़ाने में मददगार हो सकते है।

मूल्य एवं मूल्य शिक्षा

प्रत्येक समाज के अन्तर्गत कुछ ऐसे पूर्व निर्धारित नियम या आदर्श पाए जाते जिन्हे ध्यान में रखकर ही लोग व्यवहार करना पसंद करते है। इन्ही नियमों एवं आदर्शो को मोटे रूप में मूल्य एवं मानदण्डों की संज्ञा दी जाती हैं। मूल्य 'जो होना चाहिए' से सम्बन्धित एक विचार का नाम है। यह हमारे विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को प्रभावित करता है। मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवस्था के साथ गहराई से जुड़ा हुआ होता है। मूल्य जीवन के उद्देश्यों और उन्हें प्राप्त करने के साधनों को स्पष्ट करता है। हमारी समस्त सामाजिक गतिविधियां मूल्यों से जुड़ी होती है। समाजशास्त्र में मूल्य एक प्रकार का मानदण्ड है, परंतु साधारण मानदण्ड को हम मूल्य नहीं कहते है। **जॉनसन (1983 :50)** के शब्दों में **"**मूल्य सामान्य आदर्श है और इन्हें उच्च स्तरीय मानदण्ड कहा जा सकता है।**"** अतः जो उच्च कोटि के मानदण्ड होते है उन्हे ही **जॉनसन** ने मूल्य कहा है। **आलपोर्ट (1905)** के अनुसार, ''कोई भी साधन जो संतुष्टि उत्पन्न करता है, मूल्य के रूप मे पहचाना जाता है।'' **लाईट एवं केलर (1979 : 86)** ने स्पष्ट रूप से कहा है कि ''मूल्य सामान्य विचार है, जिन्हे लोग किसी चीज के अच्छा या खराब, सही या गलत, आवश्यक या अनावश्यक होने के रूप में देखते है।**"** सामाजिक मूल्यों से हमें ज्ञात होता है कि कौन सा आचरण समाज के लिए ज्यादा अपेक्षित है। मूल्य के साथ हमेशा यह भाव जुड़ा होता है कि समाज के लिए सबसे अधिक जरूरी क्या है अतः यह कहा जा सकता है कि मानदण्ड समाज के लिए सबसे अधिक वांछनीय है उसे ही मूल्य कहा जाता है। उदारता, ईमानदारी, देशभक्ति, सत्यता, मानवता, उपकार, दानशीलता इत्यादि मूल्य है। किसी समाज और राष्ट्र के विकास में शिक्षा का महत्व सर्वोपरि है। शिक्षा वह कुंजी है जो मानव जीवन तथा किसी राष्ट्र की संभावनाओं के सभी द्वार खोल देती है। शिक्षा की प्राचीन परम्परा बताती है कि उसका स्वरूप ''मूल्य'' ही था। वह शिक्षा पुस्तकीय नही थी उस समय की शिक्षा को जीवन में व्यापक अनुभवों से जोड़कर देखा गया और इस दृष्टि से उसका आशय पूर्ण मनुष्य का निर्माण करना था। गांधीवादी दौर में भी आदर्शवादी शिक्षा की मूल भावना मूल्य ही है। महात्मा गांधी ने कल्पना की कि स्वतन्त्र भारत में रामराज्य की स्थापना होगी, सबको शिक्षा मिलेगी, सबका स्वास्थ उत्तम होगा, सबको उन्नति का पूरा–पूरा अवसर मिलेगा। मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है जिसमें विभिन्न सृजनात्मक शक्तियाँ अच्छाई, बुराई को समझने का सामर्थ्य होता है। यह सामर्थ्य समय के साथ विकसित होता है और इसी के आधार पर नैतिकता का स्वरूप निर्धारित होता है। नैतिकता मनुष्य के लिये एक मार्गदर्शक एवं सामाजिक अंकुश है जिसके आधार पर वह सुआचरण के लिये प्रेरित होता है। नैतिकता का स्वरूप स्थिर न होकर गतिशील होता है। विभिन्न युगों में सामाजिक स्थितियों में सामाजिक मर्यादाओं एवं नैतिक जीवन मूल्यों के मापदंड बदलते है आरै नैतिकता का नवीनीकरण होता रहता है परंतु वर्तमान समय में सामाजिक नैतिकता एवं व्यक्तिगत नैतिकता के बीच द्वन्दात्मक स्थिति सामने आ रही है।

शांति शिक्षा वर्तमान आवश्यकता

शांति–शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को मूल्यों, ज्ञान, व्यक्तित्व विकास, कौशल एवं स्वयं को दूसरों के साथ एवं प्राकृतिक पर्यावरण के साथ सद्भावनापूर्ण जीने का व्यवहार सिखाती है। जहॉ तक शांति शिक्षा की आवश्यकता का संबंध है तो छात्रों में शांति शिक्षा का प्रसार अति आवश्यक है ताकि वे समाज के एक जिम्मेदार एवं सक्षम सदस्य के रूप में समाज के विकास में सहयोग दे सके। यद्यपि उदारीकरण, निजीकरण, एवं वैश्वीकरण आदि के द्वारा समाज की जो प्रगति हो रही है वो काफी प्रशंसनीय है एवं समाज के लिए लाभकारी भी है लेकिन इसने अनेक सामाजिक बुराइयों को भी बढ़वा दिया है। आज सम्पूर्ण विश्व के लोगों ने अपने मन की शांति को खो दिया है, साथ ही उनके सम्बन्धित समाज में आस्था में भी कमी आ रही है, सभी की सोच एवं व्यव्हार भौतिकवादी हो गया है एवं इस भौतिकवादी युग में सभी पैसों के पीछे दौड़ रहे है। लोग उभरती हुई सामाजिक बुराइयों या समस्याओं के प्रति गंभीर एवं जागरूक नही है और इसी का परिणाम है कि वे इनकी तरफ उचित ध्यान भी नही दे रहे है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए काफी नुकसानदायक साबित हो सकता है। समाज एवं सरकार दोनों का यह उत्तरदायित्व है कि उपयुक्त आधार पर शिक्षक उपलब्ध करायें जिससे आने वाली पीढ़ी के अच्छे जीवन एवं नेतृत्व के लिए परिपक्व एवं जिम्मेदार जनसंख्या का विकास किया जा सके ।

हमारे पास ऐसा कोई संसाधन नही है जो मनुष्य जाति या मानव से सम्मेल रखता हो क्योकि मानव सभ्यता एवं विकास रूपी चट्टान का आधार है। इसका स्थान कोई नही ले सकता है और जब मूल्यों एवं शांति शिक्षा की बात आती है तो इसके विकास एवं उन्नयन के लिए मानव से बेहतर कोई अन्य विकल्प नही है इसीलिए इसमें शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

मूल्य, शांति शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका

शिक्षा एक ऐसा सशक्त एवं प्रभावी माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति का विकास होता है उसका उद्धार होता है उसका सांस्कृतिक नवीनीकरण होता है उसकी आर्थिक प्रगति होती है एवं इनसे समाज एवं राष्ट्र विकसित होता है। 1964–65 में शिक्षा आयोग ने यह माना कि किसी भी देश का निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है। यह सही है कि किसी भी देश की प्रगति उसके चारीत्रिक विकास का स्तर उसके नागरिकों की शिक्षा एवं उसके शैक्षणिक पर्यावरण एवं उसकी शिक्षा नीति के साथ जुड़ा रहता है। लोकतांत्रिक राष्ट्र एवं समाज की सफलता शिक्षा के स्तर एवं मानव संसाधनों के विकास पर निर्भर करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्त क्षेत्रों में परिवर्तन की लहर आयी एवं अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति गहन एवं गंभीर बोध बुद्धिजीवियों में अधिक जागृत हो गया किंतु राजनीति के सर्वव्यापी प्रभाव पूंजीवादी शक्ति ने शिक्षकों की सामाजिक चेतना को उपेक्षित किया। सत्ता, शक्ति, मान, सम्मान, पुरस्कार ,अंलकार, आदि के प्रलोभनों एवं प्रभावों ने शिक्षकों को सरकार का मुखापेक्षी बना दिया है। परिणामस्वरूप शिक्षक अपने दायित्व बोध के प्रति उदासीन हो गया। स्वार्थवश अथवा विवशता के कारण वह सत्ता, सम्मान, आर्थिक लाभ के मकड़जाल में फसकर निर्जीव होकर वह अपने उत्तरदायित्वों के प्रति न्याय करने में असमर्थ हो गया। जबकि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत गठित शिक्षा आयोग ने कहा था कि शिक्षक की भूमिका आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। **राधाकृष्णन** (1965) कहते है कि ''शिक्षक जो करते है, छात्र उसका अनुसरण करते है, इसीलिए वे उदाहराण प्रस्तुत करते हैं। शिक्षकों को अपने आचरण से छात्रों के लिए एक उदाहरण बनना चाहिए।''

समाज के उत्थान में शिक्षकों की भूमिका निर्णायक तो होती है उन्हें मित्रों की तरह, दार्शनिको की तरह, छात्रों के मार्गदर्शक बनकर अपनी पृष्ठभूमि तैयार करनी चाहिए जिससे समाज का उपयुक्त सामाजिक स्तर बना रहे। शिक्षण के उद्देश्य में छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण एवं विकास में शिक्षकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है अतः शिक्षकों का यह दायित्व होता है कि वह छात्रों के सामाजिक मानसिक भावनात्मक एवं बौद्धिक विकास करने में छात्रों का मार्गदशर्न करें। **स्वामी विवेकानंद** जी ने कहा है कि ''शिक्षा दैवीय पराकाष्ठा का घोषणा पत्र है जो मनुष्य में ही निहित होता है एवं इस शिक्षा का सर्वत्र प्रसार होना चाहिए जिससे आने वाली पीढ़ियां बदलते हुए परिवेश में उद्देश्य पूर्ण, लाभप्रद तथा अर्थपर्ण जीवन व्यतीत करने योग्य बन सके एवं समायोजित आनंदपूर्ण सुख का अनुभव प्राप्त कर सके।'' शिक्षण विशेषज्ञ का यह कार्य है कि वे छात्रों में शिक्षा को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए स्वयं प्रभावशील हो उसे बच्चों की अंतःशक्ति को विकसित करने के अवसर उत्पन्न करना चाहिए। जिससे छात्र भविष्य में रचनात्मक एवं विकासशील बन सके। शिक्षा का स्तर नये–नये तकनीकों एवं तरीकों का प्रयोग करके उच्चतर पर पहुंचाने का प्रयास किया जाना चाहिए जिससे छात्र के मस्तिष्क में नये विचार एवं धारणायें उत्पन्न की जा सके। शिक्षकों के समक्ष छात्र रूप में देश का महत्वपर्ण मानव संसाधन होता है अतः उन्हें इस प्रकार से विकसित तथा ज्ञान प्रदान करना चाहिए जिससे उनका जीवन देश की प्रगति मार्ग में उचित योगदान करने में सक्षम हो सके। **वेल्टन जेम्स** ने कहा है कि ''मानव समाज के बुजुर्ग सदस्यों के आदर्श जीवन से आने वाली पीढी जिस प्रकार लाभान्वित होती है उसी प्रकार शिक्षा से भी अत्यंत स्पष्ट लाभ प्राप्त होता है।'' अतः शिक्षकों के समक्ष मूल लक्ष्य है कि वह ऐसे सामाजिक ढांचे को तैयार करे जो आपसी वैमनस्य एवं अविश्वास को समाप्त करके नए सामाजिक मूल्य स्थापित करे जो स्वस्थ मानव संबंधों पर आधारित हो। **रविन्द्रनाथ टैगोर** का कथन है कि ''शिक्षा हमारी बुद्धि को विकसित करती है जिससे बंधनों एवं रूढीवाद से स्वतंत्रता मिलती है।'' इस प्रकार शिक्षकों का कार्य निर्णायक होता है अतः उन्हें छात्रों के मस्तिष्क, ज्ञान एवं शरीर के विकास के साथ साथ उनके मन में **शांति, स्वतंत्रता, न्याय एवं सुरक्षा की भावना** भी जागृत करना चाहिए। शिक्षकों को अपने क्षेत्र में पूर्ण समर्थ होना चाहिए, उनमें मानव संबंध, कला, विज्ञान एवं विश्व के प्रत्येक प्रकार के संव्यवहारों में समायोजित होने की क्षमता होनी चाहिए जिससे वह विद्यार्थीयों को वर्तमान विश्व की जानकारी पद्रान कर सके। शिक्षकों को नूतन विचार एवं मानक, छात्रों में उत्पन्न करके मानव कल्याण के मूल्य तथा आपसी सौहार्द्र की शिक्षा प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

आज के वातावरण में शिक्षकों को बहुत समर्थ एवं सूझबूझ वाला होना चाहिए क्योंकि कक्षा के नैतिक मूल्य, स्कूल परिसर एवं सामाजिक वातावरण दिन प्रतिदिन परिवर्तित हो रहा है। अतः इन बदलती हुई स्थिति एवं समाज की आवश्यकताओं के लिए यह जरूरी है कि केवल उन्हीं व्यक्तियों को यह दायित्व सौंपा जाये जो इन चुनौतियों का सामना करने में पूर्णतः सक्षम हो। आज शिक्षा का विचार भी तेजी से बदल रहा है इस दिशा में नई खोज, नई तकनीक नए विचारों को समावेशित करके उसे प्रगतिपूर्ण एवं लाभपूर्ण बनाना चाहिए जिससे छात्र एवं समाज प्रगति के उच्च शिखर पर पहुंच सके और यह तभी संभव है जब शिक्षक बहतु समर्थ एवं प्रभावशाली हो। इस प्रकार भावी समाज के उत्तम जीवन के लिए तथा मानव जाति के उत्थान के लिए आवश्यक है कि नई शिक्षा पद्धति में नीवन तकनीकी मूल्य, नई विचारधारा तथा नीतिवचन से छात्रों के मन को प्रभावित किया जाना चाहिए जिससे विश्व समुदाय का द्रुतगति से विकास हो सके। **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ने आशा व्यक्त की थी कि ''जिस प्रकार उषाःकाल पूर्व दिशा से ही प्रारंभ होता है जहां से सूर्योदय होता है अतः शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे अपराजित व्यक्ति अपना मार्ग अनेकों अड़चनों के बावजूद

खोज लेता है एवं अपनी खोई हुई संपदा पुनः प्राप्त करने में समर्थ होता है।'' **सर्वपल्ली राधाकृष्णन** के मतानुसार, ''शिक्षा ही वह आँख है जिससे राष्ट्र एवं विश्व का विकास एवं उन्नति संभव है।''

निष्कर्ष

शिक्षक, सामाजिक परिवर्तन के अभिनेता है एवं इनका शांति शिक्षा जो भारतीय संविधान के आदर्शो , समानता, न्याय, स्वतंत्रता एवं भाईचारे पर आधारित है के द्वारा छात्रों में साम्प्रदायिक सौहाद्र को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका है जो राष्ट्रीय एकीकरण का सूचक है। शिक्षक छात्रों में सद्भावना, शांति एवं भाईचारे के बीजों को बढ़ी कुशलता से अंकुरित कर सकता है एवं उनको वृक्षों के रूप में विकसित भी कर सकता है। लेकिन यदि शिक्षक अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाये तो ये मूल्य आधारित शांति शिक्षा के अच्छे परिणाम नही मिलेंगें । फिर इसका दूसरा रास्ता यह है कि मूल्य आधारित शिक्षा को वैश्वीकरण की प्रवृत्ति की तरह बढ़ावा देना होगा। राष्ट्र की उन्नति एवं विकास में युवावर्ग का महत्वपूर्ण योगदान होता है वास्तव में परम्परागत समाज में जितनी आवश्यकता समाज को नियंत्रित एवं संतुलित करने में बुजुर्गो के अनुभवों की होती थी उतनी ही आवश्यकता वर्तमान समय में शिक्षको की है क्योंकि सामाजिक प्रगति एव विकास के कारण समाजीकरण के अभिकरणों में परिवार का महत्व दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा है शिक्षक जो वर्तमान में औपचारिक शिक्षा की देन है अति महत्वपूर्ण है। देश की प्रगति के लिये युवा वर्ग में ओजस्वी एवं नवीन विचारों की आवश्यकता होती है, क्योंकि युवा नवीनता के प्रति लगाव रखता है तथा वह हमेशा ही उत्साही होता है और यही युवा भविष्य को वतर्मान और भूतकाल से जोड़ने का माध्यम है, जो समाज को नये रूप में स्थापित करने का हौसला रखते है। अतः नैतिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक अवमूल्यन को रोकने के लिये सबसे अधिक आवश्यकता युवा पीढ़ी को मूल्य आधारित शांति–शिक्षा की है जिसमें शिक्षक की महती भूमिका है। समाज और मानव की मूल्यपरक शिक्षा से ही उन्नति संभव है।

REFERENCES

- Y.P. Agarwal, 1967. *Education and human resource development*, California, Standford University.
- Asghar Ali Engineer. 1995. 'Lifting the veil: communal violence and communal harmony in contemporary India' Delhi: Sangam Books.
- B.F. Skinner, 1979. *'Educational Psychology*' Prentice Hall India Ltd. New Delhi,
- Sharma Arvind, 1989 "Ramakrishna and Vivekananda: new perspectives" Sterling Publication, Ramkrishna and Vivekanand, New Delhi.
- Report of Education Commission, Govt. of India Publication 1964-66.
- Ludden, David, editor, 1996. 'Contesting the Nation: Religion, Community, and the Politics of Democracy in India' edited by David Ludden (Philadelphia: Univ. of Pennsylvania.
- William, R.M. 1968 'In Encyclopedia of Social Humanist Ethics'.
- Radhakrishna, S. 1965 'The Present Crises of Faith' An Orient Paper Back, New Delhi.
- Dr. Bhaskar Rao. 1996 'Global perception of peace Education' Discovery publishing house, Delhi.
- व्यास हरिश्चंद्र, 2010.*'नैतिक शिक्षा'* साहित्य भवन प्रकाशन,दिल्ली।